नुविधिययमनः। उत्तीरभद्भवयात्रविधियमभाग्नियतः । उत्तर्भक्षात्रवातः । उत्तर्भक्षात्रभाग्नियद्वः । उत्तर्भक्षात्रभाग्नियद्वः प्रशिक्ष्यभ्यविदेश्यपेवद्यक्ष्यं भाभागे व्यथ्भाष्ट्रं प्रविभाज महं र्राष्ट्रेयवीरं वल्यभुउषः व विराष्ट्रियवीउभाभगारभुद्वेय प्रतिक्रियनकामि " द्वारियमश्रेष्यिमश्रेष्यिमश्रेष्या उ उ मुक्त्रमभन्। थावरथानिन लामिकक्ष्मिश्यास्थानिमानिमानीय लहमानगरिक्षणावडेकिरेकवर्त्य वृथिम् त्रियं प्रयोद्भगत इडिभिडियादिल्लनथर मानभाष्ट्रभविशाल ॥अभव्यक्रमधंड हताथि। भभिष्रभविष्ठित्रम् १ भभवागमक स्वेद्व प्रस्था य द्रभाति सुरयन का भारति विशिन हिंग मान्ये पालिने साथि। म

विस्वारिक्षिक्स्विक्स्विक्स्विक्स्विक्स्य वक विधाक्षित्र स्वारित्रः भवित्रभाषाक्रक्रण मुंद्रिका विभाग उउद्दरमामन् । इद्भारभागभभभगन्यभ् द्विका विद्राधम्याम् स्थानिय अपनि धना द्वार्थिय स्थानिय स्थान द्वरीसूय्ययोग्न मणीर्किके:यक्ष्री: अक्वन्त्रविक्षा" भूम्प सहित हिन्द्र स्ट्रिक स्ट्राय स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्राय स्ट्रिक स्ट्राय स्ट्रिक स्ट्रिक स्ट्राय स्ट्रिक स्ट विविष्णयात्रिण विद्रावश्चाण द्वास्तरका कि विष्णायां में प नंदिग्रंथिय । भारतियम्भारति वाराभाग राज्यवित्रं भनतीभन्गात्रा अर्माधानहावला

अस्तिभागस्त्रीभवगानायन्त्राभ १ कार्सनिक्रीउपअधनरीध रीरहम्द्रभन प्रशिभ अन्याभन्नभने भने परिक द्रुप्रस्थात । प भारिक्षममुद्द्रश्यम्बिराउपसिविक्रास्मसिक्ष्मस्य अनुस्र भागायनियशिकिष्मायिक्ति उत्तर्य स्थानिक स्थायिक वर्षीर "भगद्भीरियग्रेशकण्यथ्यस्थित भार्तीणवृत्वरूप ज्ञासिंहीत्रज्ञ मिड्स्सनिंग्रेडिय किर्मानिस्स द्वारी वाभागभा याया किहार भिर्म्मक्रान्वक्य उत्तियम श्रीअत्वरंभग्रहेत्रन हनअवभन्। भूधरीमं वर्रा रिनंम छ येम ग्रह क्षण्यथयमुदि वैया भूवमाय उग्नुक्रिकिशिक्ष्यभाभ

ममाभे क्राभाशीइन्य दिवामन्ये जिस्मान्य दिव निश्र हार प्रमाग्यारिक भारतिक महाक्षेत्रका मिन्सार्थ है: प्रयुपादवंशभग्ने वर्गम्न (इतंप्रह्रक्तन्त्र)। हाइसुपा किनक्दंभ्रभाभित्र हर्ने यह अहिन अहिन अहिन किन्निक प्राथित के अस्ति के स्वति के स विश्वपाष्ट्रिक्यानम् नारिक्यान्या विद्यास्य सम्बद्धाः सम वस्वभविउद्भविचित्र हरं अधिके हमु हम धारिन उपनवेर मभक्मग्रन विषयार्थभ

अप अप

भवः अक्रमेव। कभूक्ष्यपनिष्यं क्ष्यस्थिति स्थानिसस्य शिव्यस् इत्वक्षत्रक्रमण्डभिक्षण्यम् क्रमद्भीति। इक्रमनीभ्रितिनी प्रधारीसपरिक्रम्भि १ क्रम्यह अविद्यक्तिकर्णि क्लभारयेश वी दराभि हे स्वभवित्रभेत्र प्रक्राणी उद्गेष्ण व भवी द्वारा भाभाग नियम्हें धें इस् भारी डिर्माय्य इसे इसे इसे इसे हो सिर्म इसे हो वाक्ष्यें के हैं। उने क्रियार भीति धानु ि उन मिरिशह द्वार क्रमदिशा मध्यमानकर जुन रिम्बभाष्य भूषीः धरीवपांचन ले भेषाभ्रहंभिदियामयि।। वि मेर्गभेष्ठभिन्निमेर्गभेष्ठम् वित्र मेर्ग भिष्ठभावास्त्र भेषा स्वारम्बन्द मेर्गभेष्ठभावास्त्र भेषाभिष्ठमण्यास्त्र भेषाभिष्ठमण्यास्त्र भेषाभिष्ठमण्यास्त्र

भणिक मुभव मुभेण के वीभा भागी यास पा मध्य भू गत् चे भूमया । नः प्रवीभन्न ख्रांभणभाभाभाभित्र मनीरंभविष्यक्रं वर्षेभ प्रमुद्धि निमाभागिमाभागिमाभाग वर्त्र उद्गे उद्भागिमक यं वस्त्रव्वा वियमुरश्रक्षयभेगणयभेदिनीभिद्र। मक्णभद्रभक्ष अभेभेभेश्वर्णा अने निभाचार क्रणा काली अनु वं में भार कारि वि वि जिद्भिष्य गलक्ष्यक्रमनं इत्र शामिक्षमा क्षित्र प्याञ्जीयाङ्ग्रह्मण्डले भ्रमणभक्षा भ्रह्मण्डले भ्रमण्डिकि रीया १। क्रिक्ट अस्तिया ३ मरीवंभिष्य की मा सक्त उन्नाभकत भद्रभितिपान्नभी। एक्सेड्युक्तिध्रमी प्रधायनायभाक

अधभी १। त्रुन भग्ने जनग्रिक मारि उत्त्र उत्तर्व निव्य क्रिन प्रमार्के महिष्टर्भीन दे हरू भीन य उद्दे विदिश्वि रीक्षित्रम् देश वर्गीदिन्न भविद्री। अञ्चलन वर्गीद्रश्य विमाध्यद भिक्काउद्यिमण्यरीक्षेत्रअभागा उद्यभी गडलिभभिक्षेभी रिमायदीभावक मयाना भद्यभा छान्। भारते का विक्र चर्च रहे हैं । स्वभू पीभेटि पिरी येन चूने मया डा" भक्ति स्थः भक्ता भन्ना अनु उ यद्वभिषक्भः भाषानामम्बन्धां मग्देनवनी वीन विद्या उर्थे यार्थेयायारे ॥सिभम् वस्तम्व'न भियम् वैभम्व न्यू वंभम् म्तः भेग्मवभेडम् यष्ट्रं भस्ते प्रत्यानं वेप्ता निर्णिण् डेवमंत्राह्ण मंत्रक में करडे क्र्याभिशियलकरं रक्षण्यभयक्षी " श्रम्भाराज्य न व ये वं हें स्थाय भारतिया अर्थित सामित्र मार्थित सामित्र मार्थित सामित्र सामित सामित सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र स द्वभद्रविषयभावस्त्रव्यात्र्वात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रभ्य उत्तर्भाग्या अवस्था नियाम् मिन्याम् मिन्याम् अवस्था अवस्य अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था स्योगप्रिक्तमंडचाउठयश्य "मूझ्मल्यम् स्थानंडचाउठय बुरम न भड़ेममेष्वनाईमामेड के उठवा पुरम न भाई मार्थ वा आई मार्थ इन्डियर्ग प्रांगमेम म्रंगमेर केरिक्र केर ल्यु कृत्लिइउयमय्यान्यस्थारम् भरिषक्य भरिष ग्रम् भगवष्ट्याभगवष्ट्रगल्य भगत्वाचारानक्ष्य अभवगणनक्षम्। भेर्यक्षत्रभाषिकस्थ भजन्यस्म अभव

(रेग्ट्रम्नाभक्षम्।भन्कम्भाभावक्षम्।भ दयम अस्त अस्ति इंड स्था चर्डिंग मनदर्भ चे भरित महत्त्व भूग्भवर्षे स्वश्रणीय कि स्थाय मन्ने के दी सव अवस्थ विज्ञानयनद्रिय विः । श्री वर्षिक में म मन्यान कुल अमितिकार हिया है वे राषा इसमें हवर वे या केवा अधनीं विक्रिता अः हव मार्डिं अग्ले विमार्थ हवे द्वारा । क उर्यागान्य गुरु समारणंदिकः "भाउत्रेयासभावत्याभाउता लानी विका किंत्रिकिं प्रधार्य में निविभान्येड "भ वक्तरण्डेमिथ्रेग्यन्द्रउभिक्षित्र भग्रहरुउउठवायव

महामायय निवहणावसीयामायध्ययम् तिः " रूप्ताण्याने विकास विश्व प्राचनम् । वैश्व स्वाधिक रिकार स्वाधिक विकास स्वाधिक स्व द्विभित्रियः हवडिहिन्द्र कि स्विभित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेश विद्या प्रदेशित्र प्रदेशित प्रदेशित्र प्रदेशित प्रदेशित्र प्रदेशित प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित्र प्रदेशित प्रदेशित प्रदेशित प्रदेशित प्रदेशित प्रदेशित प्रदेशित भुनार्षिपरिभमहभद्रस्य असिक "अक्रमचीन क्रिशिष्ट दः गृहिज्यनय्वश्रह्तित्रुअग्नीशः भन्तकभाश्रः भेद्रुद्रक मंभ्यु हैनागद्या डिभ्युः भमकुम मुक्ता भाष्ठभाषका गाय

यम नभवभंस वृचीयाः सामता लगामीथाः व्याद्धाः अग्रह्याः । भवक्रायुग्नुभुः अविद्वारीशः राध्युभंगिशः यङ्ग्रिपीयाद्वारं मा द्यम्हः वक्रनं यनभेयुक्तभुक्तम् नश्चिम्याभविमान रमभागता वर्षायमाः भवर्णभागमा किर्याद्यकत्त्र व नभू थिरेण्यू उन् विक्या राज्या नम्म महिएक्त वार्येषः नभू यः । कंग्रह्णयः वितिभाषामण्डे उग्यापास्त्रविषः। अर्थे व्वा ए रिकेव वा विक्रयाः भरिद्याः उद्गिरिक्षा भरित्री भन्नम् याः भूगम्भयानि भ य भिष्ण ग्रहन द्विरण्यीय क्रवज्ञ सङ्ग्रद्धिक विद्या संस्थित ग्रह्मा

भागंक इंडे ब्यानंक इंड भयी तुनंक इंश या भवा विभिन्नी वा दंद कें " हैतस्यान्य से अध्यान्य अधित्य अध्यान्य से हैं उर्ज की कित्र इंमर्गन भश्रामाक्षेत्रक्षेत्रकार्याक्षेत्रया उद्यान विक्रिन्डिन्डिक्णन इटाककरानिक्र उपम्प्रमध्यालभरानश्रीवयुष्ट्रिक क्रांचकी के स्वकी देशिय समय अवस्था समा कि कि स्वा के कि का का अवस्था यक्षक उद्देवकी किंद्राज्ये विश्वजिन मध्योगिता उथनीय गुम्बिल्ली क्रिक्स स्थान क्रिक्स स्थान स्य विश्वानिक वित्र प्रतिभाग्य अभेर उत्र मंग्रेस के वित्र प्रति । अभेर उत्र मंग्रेस के विश्व के

भन्ने वेष्ठ वास्ति । वहार कि देश मधावा भक्र मम । वहार थ न्यारक्षाम् स्थित । विकाल स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत रेशभारकत्रक्ति हे सम्मान्त्रम्भ में भारति । भारती मन्द्र रक्तिविषः दिश्चरवेद्यात्रक्षिभीमुन्येभ्यान नवर्गेन िक्रवश्च ज्ञलाई हराउद्या नायरान्य वर्णीक में भना वर्ण भरीनमल्डिधार् स्थाप्तिक पार्थित । १७३ हिम्बद सामी गुलंबक्षमिलाम दिग्लंडरनक्ष्यं यहीनं उग्रजनुलाम दिवर क्रमभाद्रनेपविषक्षितियाँ गुरुवर्यवामाज्ञिषक्षक्रद्य बिकिडमे एडिसमिक्षिक्षा ना न्यसहिष्यनभव्या चेह

इलिश्चिडमा जाभूणवस्य विद्याणाम् विष्टिश्च न नाइथारिस्य न्य विद्यासी इत्र विश्व मण्डनमध्ये । विविद्याभयवान्तिविद्याभावक्त्राम् । व्यव्यक्त्रम् । व्यव्यक्त्रम् । व्यव्यक्त्रम् । व्यव्यक्त्रम् न्वश्राद्ववर्शि भारतनीयभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रचित्रभाष्ट्रचि भिष्र उत्तरभग्रेशिम मञ्चयत्व उण्माभित्य लेकिन अस्तर हिंग विद्य मान्यक्षास्तिकित्वपुद्धिति। स्वक्तिनेतिक्षिण्यनिक्निण दिभाविष्मितिभाषा नभस्यभूभाभार्दिभीः प्रवेशभितिभाषि। युद्धणिति विद्यस्ति। स्वित्रिक्षिण्यानिक्षिण

प्रामं न भीमग्मीडिडडिडिडिडिरामं मिम्रिशिमामिपिधीमिति। द समहभवाशिष्महरण्या भवतिकवाभिद्रिक्षित्र शिक्ष शिक्ष कः न द्वामक्रमचित्रभिष्यभक्ष्यद्वाद्वाद्वाद्वास्म् अभम्ह्रमभक्ष मधीदंगायस्व विस्विति विश्व मान्य विस्वित विस्व विष्य विस्वित विस्वित विस्वित विस्वित विस्वित विस्वित विस्वित व उठा उन्मिश्न उन्मेशियमद्शिक्षान्त्रम् सम्मिश् रिक्रिन विषयिक्षित्रमध्या हो मी प्रमुक्त मारी धर्मन सम गन्धिययभाग्यम् माम्यम् भाग्यत्रमा भग्रः च वत्रमा भोराध्यायम्म विष्ठा वश्चायाः मिन्द्रादितिः रा रिपविश् रडक्रिअअग्राम्याद्वरमा महिलाई मडलाई

महिंगाउँ वालक्षा निर्देश कार्मा विश्व कार्मा महिंगा विश्व उभस्याद्वाद्वाद्वात्रमञ्जूषि । एउन्स्याद्वाण्यायान्याद्वात्रम् इः "मिशिवभूग्" म्रियिभीदानिभिन्यणा "मुर्ग्नुण उं है विड्कभागदश्विणियदिव प्रभागी स्था अप्येपार अप्येपार िक अभिषे हे मह न जे हैं भारतां विभेगन में वसने भाष के म इक्र के अभिष्में वस्त्र के अभिष्ण ने सक्त इत्र के प्रिय ने व की अहा। वडन् । अध्यक्ष अच्चडाडव्यन्मावन स्तिन एक इन्द्रवेश यम्बर्द्द्रविष्टिश्रीकि शिक्ष अभिम्हरून क्वियिस्त्येद्वधाउद्याश्चाधाउन त्रियुद्गाश्चन विय

म्बर्टेंब करण्ने द्वार अभावयभे । निवार उम्मर देने विस्तार ाइहंकभः " यदिविययदिन क्रमने भिम्नाभावयभे। बार्य मान भारतभी विस्ताना कि कार विकित्य कि विस्तान मिसराभा वस्य भेट्रेगउभा क्रामीवेश महर्मिकाः विक्रह्माद्रियम् तं मृत्रश्रापत्र भूत्रभावत् इत्रश्राप्त विश्वापत्र विश्वपत्र विश्वपत्र विश्वपत्र विश्वपत्र विश्वपत्र विश्वपत्र रीश्राम्भू स्वामानका भडे अदेश्राधा अभागक इडिश ह्यी इस् िराइमाइ" लंडिने हम्बुद्रा सिर्दे विश्वयथाप्या प्रमुप्तिम हैया नगी दिन्हें भाषिशिहित्तप्र चे में विद्युक्त हैं भार मिहन न

भूकी । विक्रह्ब क्षा ग्राविश्व । । विश्व विक्रिश्व श्री विक्रिश्व । । विभिन्न । । विभन्न । । विभिन्न । । विभन्न । क्रीदिश्र इस्क्राम् ययद्यदिवीरच द्रिस्मा संस्थायद्वा ॥ भक्त । । अधारका विषय विषय विषय । भउमे। दक्षी राष्ट्रभया इस्थाय राम्। " अवाधाय राम् प्रमाने मिलिक्के माउद्देश्या प्रमान विक्रमित एथि म " इशिपहिस्तु पर्शिपशिक्षम् माउन्ति प्र

विभीद इहं मंस्डियरेभीर दिनि: युक्कियार विस्तृवेष्ट्रभाः एटंदेभः न यदासम्बल्याण्याच्याकोति ॥ व्यानाभाभी म्ब्रिक्टनाइहरीज्ञाहरात्रेन गाउँ व्यानमाभिर्धन्त्र स्वीक्षभग्रभविषिक्षित्रस्वि भज्ञारा मुल्यून मुल्यून मुल्युन उल्निशक्त । विविद्यामा भारत । इति । अत्र याजियभित्रभासिक्षान्त्राधियोग्नेनभाभित्रभासित्रभ यभिद्धानह में विकास दान मा ति उद्या सामा ने ना ति व उधकारार वियाण्यक्षकार उद्यासिन येशिभाइन य विस्तृ देशिक विस् यह प्राणिक स्विति कि वाला

विश्वरीनवकन् कथ्यनक्तिकिय नाम्यण्या विष विस्ताः मणीदिवेश्यविद्यक्तिप्रचान्यक्तान्यभागः ने महत्त्वचड्वीउ- विम्रह्वभूः इड्रावडः ५ द्वहिर्द्राहणाः " क इबर लाहा द्रशिक रहे रवस्था निरुद्ध हुन । विद्रबंद ल क्षा छ क्युयन क्रीडियोग्ना भे भ छिक्य यन जिभह्यन किं विक्रभूत्रन के ध्याल शहे भू कै भवर नगर्य क्या या प्राया प्राय भू अवर जन्यस्थानवर हे भू सर्वे इत्यमें इपे धारा है भियायह गर्ने भागार भाग है है है न न निरुद्धि भागाने भाग वि भागा भागा भागा के लिया में बहु भागाने जादा है।

शः उद्मिक्षः वर्षावयं न्यव्ये स्ट्रम् इक्षः उद्मु भूर्यारः ह वध् मवध् रंभान्ध रंस्राध विष्ठुः बहार्याः यहार्यम् क्रामा भोधीकुंव कर्ने इ क्रुक्सियाने शेशथानाथा मादाकुं विस्तिरिक्षील भज्ञगढंकिया विज्ञन्य वयानिकीय ग्राम्यवय्यामा विमितिरिध हेव: अल्याम् । सिअल्य विमिनिक विमिन करियम् भि ति स्व कव मंत्रेहिनीः क्ष्या मय्ये वायर अभेद्रय इक्ल उत्र्य प्रक्षार्य उत्ताव मचय रेशनय रेशनय विभव्य अद्भार यह च करे हैं रोधहः नम्हः प्रक्रण्डः भेग्रहः भेग्रहः व्याद्दः विमित्रदिः प इंतथः भनः मचे ह्वी श्वधार भीते न हम्बिचे दुः भन न च वर्षे अर् इ दून एक प्रथं हत मन रेमान रेमान रेमान स्मान विद्वि बाजमा व वहाँ मि

दिविश्देमः इक्षणः भेभाः सेभाः चम्परः विमिरिद्या इदं विद्वानाः विमिक्ति हिमान् किमान्य मनिका अवापि क ने क वर्ग मिला विमिष्ठ र भय से मिला निन्धिन भी गढ वनु एर हारोधकरणभन्ः । महमाउद्देशकभाग मिथिर भीवाभाषिकालामा इति इस्ति हैं माउति शकायणा द्विति व पण्य उद्यानं कडा "नघउद्या देशकं इक्रमारिकन्यन इर भ्रम् विभवद्वार्थिय भंग्राविद्यार्थ स्थान्य स् वायवेज्ञान्यभागणयाराया क्रिकित्रवार्मियमा विभव्यन्य व्या अवाणि वह अर्थित वह स्वर्णन विभाव

न्थिनेक् लडिक्पीरामनेमस्। उद्योवङिगिर्मेने निर्मानिक मनम तिथिवित् नचारम्बर्द कणस्याम भन्निस्थारम् चर्धर कुण्डामं दिवः धर्धमभवय्य कृण्डासम् दिनः मन्भेमवर्गम्य द्वाराष्ट्रनाम्य । यहाने स्ट्रनाक्चेभण्य लेखा निकारणार्थ अक्राः भेश्झी वहन निभिष्ठे या कापश्च क्रथणनभन्नभ दंकिष्टि विक्रम् यगिकीर गरम्पार द्वालाध्यम्भनेनभः यद्भाषायम् इलाई। अराधारी सिन्नाय यद्भाषेत्र क्राण्या निक्षा । यद्यापि सि श्रमत्य यसिकीर भाष्ट्र मुख्य निक्षा मने ह्नी: हा एस रावनः भार्छ । यद्भाषाय इक्ष्मिं भार्ष्ट्र में

निवाद मंत्रेक्वीः च्याःवीं बहायश्चनार्धकंबद्धनभः महम्रापः यद्रकृत्त अभन्तवर्त्तं गातिन्थि । एवंस किन्तुनं ग्रथ्य निर्देशितिर हा बार दिया भी विभागित महारा ने स्कूला ने विकिशहाँ व ल क्रिय प्रक्राय क्राइम्प्या क्षित्र वा निविद्या क्षित्र विद्वित्र प भाग ज्या से से र वत् यू भंग एक का निका कि विश्व पाति वहा याम्बारिके वक्षण्यवित स्थित। याभेग्य वक्षण्यातिभ भर्ने । अवन्य का कार्तिन किंद्रनभा के अवन्य किंद्रनभा कि व वर्षक्ष अवश्व द्वार प्रमान क्षेत्र क

पराभर्यक्षण्या इक्षण्यक्ष भारतिक्षण्या । इक्षण्यक्षण्या । इक्षण्यक्षण्यक्षण्या । इक्षण्य उउद्याननी उद्यादेशिक एक निर्माण भी या बक्न भन्न भने जन वीराभी याभिक्र जी भक्के प्रथा विश्व प्रवास का में भनमें के कि कें भनभन्या विडिम् विडिम्भ्यप्रणनाक्षरीएकरामा बाउदेश क्युडिंडों के दिवन भी ने विमिडि भू कि डिभट्ट बार्चि दिन वी उधिक देशिविद्या अधिवास साहित्र उत्तर प्राप्त अधिक क्रियमञ्चरितिक्षा कुलाल ०० भूत्रमण रिपिविश्विक्षा के प्रश्चिम उभ्रद्धा विश्व उपनजा का मध्य वर्ग नी दाला भारत वर्ग न

विद्युद्रभाडिमथवज्ञवायम्पिकिदियनभज्ञभ्यसम्पर् स्थान्य ने भरत्य द्वार भेभन्ने भर्ते गर्म व सुन्य प्रेरिंगाम् क्रीन पञ्चारिक गीरेभने द्रियम् यस्त द्रिति क्षाभव क्रिक्र या वामा क्रिक्य स्ट्रामिक स्थापन के प्रमुख्य स्थापन न भनभा वार्षित्र में विभाग परिदेश सह प्रविश्व स्थाप स्थाप स्थाप स्थापन

される

उपन्जनख्या हिराहा कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या वि हिन् भिन्न अभिक्षित्र अभिक्ष के नाम भावता के नाम अनु ल्लाभाषा भक्तिक र क्रिक्स कार भन्म ने विमार देशक यशका भनभारन सम्बद्धां उद्या इस्वे विकार नाम स्थित अवस्त ने उत्रे इ.ज्यानी स्वारित्र हुन। नमा हिन्द्र नाभी हा: नम इन्हें सथके हुन वः नगारिभाषा इस्तियः गरुउथेव काङ्गीयः । । ज्ञान्यकरः धुन्गीषिकेशास्त्रीहल्यभूचैमुउद्देशकेश्वभक्त हवानन १ बीउ में हैं है है। भे अई बिउ: ३ - बिडिम् मिहन बर्क बरावि

इ नमेर्काल्डिडिकमचैग् । इउठउडिवियाणियउनुभणि: व्यवस्थान वास वास यह स्थान किया किया विकास मान्य में सुध माउदेशक पवनः "विधिरिभीर भविद्याले । करे हा न्युपवन बाउँदेशक्यराधं निवधिभा अद्यक्षणा केस्य वभनाइनभन् नाभ अयानान्त्रांभियानान्द्रश्वभेक्ञ्च - अन्यक्तिश्विक्तिशि अन्यक्षणनात्रक्यः भूणनान्त्रकं क्षित्रस्य एतियात्रभे हिन्द्रभि य जन्म मन्द्रभार दिस्य विभूत स्वार स्वार माना स्थ उम्मकं उत्रभुने ने पाय विषय विषय अपने विषय अपने विषय ।

कं उडिश्च सभावें ने भारत न लं स क्ष्णा इर पारत देश मारि धेंड पर कैउइच्चित्रभभेत्रेगियण्या।। र उडदर्डिमियामा विउत्रभणिय नार्क ग्रन्सः नमहित्राभित्रेषमा मान्य । एति मानुस्याक्ष्यवनः । माउदिमकाथवनामनन्यभागवाद्राति । उमनन्यभागा।। उद्मे अचिक्त मुनियिश्वभ्रष्ट्य दुत्ता नेभेवण्या उन्यम्भिह भन्न अनुवा अधीमे दिग्यां विद्वा खिदा अया मुनिपिति थिया विक्रभी हत्र क्रमण्या प्या प्या विष्णु क्रमण विष्णु के विविक्रभी प्रकार के विविक्र मित्र क्रमण विष्णु के विविक्र मित्र के विविक्र क्रमण विष्णु के विविद्य क्रमण विष्णु क्रमण विष्णु के विविद्य क्रमण विष्णु क्रमण क्र

वस्य विस्वर प्रमाशिक्ष विरङ्गीराभित्र हिरवध्य भिक्ष व । इत्रिभम लन्तीयभाग्र कामित्रमा विशिषधेडेश भारति है। भुउन्सभर्गिष्ठभुम्न दुरुणभाषि स्र्वेति भूतिस्र्या निस्मिक पर्या कि रिश्व श्रामिक श्रीक निर्मे प्रामिक निर्मे पर किभायनभेष मधुभाभार्षभीः त्रीभीिकभिष्ण प्रमणिक उद्याद्भित्रभू सिक्यमिकिद्रिद्र दिश्र विभा भिष्मिदि कि डीयं असिएसिमिमिमिमिनिड प्रमानियोभिष्णमङ्ग्रिय अयमचर्डेडवाभि एडि अडीयाभी एमभनभी भाभाषा व

चन्डम्डब्रम्भभभम् इं मभर्णम मीख्रमण्य इडव्या च्या हिडि माउनीभी उस्पेमीडियाभनभत्या । उस्मिन उस्मिन उस्मिरिक्षी द्यां जम्बर्म मधिलपाउँ विज्ञभित्रभभ हं म्पेन इच म विधेर अन सभग ना कि पच धान च इग भ च भा भे भा ग्राम स भभाग्रवत्रभाभाष्ण्य्ययाण्यनमाविष्ट्रम् मध्यवाधिक्रि क्रम्दितिः । " इत्वथिति इत्रिक्ति विक्रम्पात विमिशिधिईमाउभधुगाङ्गिरंस्वेस्यस् लियेइ क्रारं मर्गि अल स्त्र वलक्षः भवं वित्र उधार्ष यहि क्रिक्त मा से कि वर्षे म्लभाष्ठां ॥ ४ ह्योत्तिभाष्ट्रः लनभक्ता । उन्नीभिनिकद् ॥

(इंगेस्टः प्रयेश्वः प्रथणीक्यः (इंग्रियन्) प्रयाः। न्धित्र य उडिअन्डइस।न्धिंपरिभभक्रयद्रह्मानिष्युपरिभीर नेभेवाम ॥ भाविद्रान्नि। इ दुल्यिम् पड्य अपूर्य अपूर्ण अदयवि कृत्ले स्वर्टी अप्रयेष्टः विग्रहे अप्रयेष्टः क्षेत्रहः अवनुस्वयः इं निचथाकि। प्रयुक्ता विभू मनभः निम्म हाथा भामायभभूमा अरयि। हर्ने हेणापि ग्रहेणा करे हः भूव वर्ग्य प्रमेश भि। ख्युरा। खड्डा माने प्रदान समनकी ननभ उपद्र ॥ रव विश्वादयं मन्त्रा। भिड्रभूषद्वां भव्या सम्बन्। नेभेल्या धार्मिनीभित्रि । धीरिनीभित्र

रियानि। यह रिक्सियं ने किस्मियं र उत्त्व वर्ग प्रविद्यान लहर च्यार अपराभाषाकाशि । अस्ति अपरा अस्ति अपरा अस्ति। रियमजनभूष्यमनभूडीकान्यक्नभू मुल्यु द्रुयभाष्ट्राभाष्ट् छि उन्देर्रियमे ० दर्भभ्रम भिनेत्ने ३। भवस्था थाय च विक्रम्भभ भ यामा क्रमा । ए प्रमण उनेवियं १ एण्डा भू एना भुड़ वाय इ उथिमाउनिय एकं विम्हार के प्रमुख्य भाक्ष्य द्वारे पर द्व लक्षणा अरुधाउँ । अरुधा अर्थ मिर्देश किर्मे हः क्येहः। प्रवत्रायक्षण भाष्ट्राया प्रवत्रवाम्यम् गर्भाषा ।। विक्रा भः म्या विष्ठ अ विद्ये वर्ष्ट्र योक्त गर्

न्यकंगवर्ग। यह्मर्याभागत्विम् स्वीरिय। नेभेष्ठ कृत्नि स्वरा १५३ का कि विया गामि उन्नभाषिः " एति अनुग्रभा"" अववस्रवहाँ म निर्मित्रभीर नम्बाम भाषराल्या इज्लाश्री है न्या वर्षे अवव्यक्तमा विभिन्न मान्त्रेयका भावशाला रहिल द्धित्यः य वेत्रीताभाष्ठयग्राष्ठ्रप्रकाणवेत्रद्या। यभनग्रीना नर्भ क्य। भारत्ये १०१ भूमका नि। कर्जन शहरि। व्यवस्थि न्याच्याच प्रवासम्बर्धभिष्णकान्या । क्रिश्नाभिक । प्रवासिक सिमं । थिविनिस्थिं । पानिभवाना । प्रथमं अद्युव्पे इति भिकः अद्वा अञ्चलका अविश्व भागा विभाग विभाग विश्व । विश्व अविश्व अविष्य अविष्य अविश्व अविष्य अ

त्रअमानिधे न अयुष्ट ॥ इउरइ डिमियाना कि इनुसमाधिः न उद्रथन ज्यबन्द्रभाग नवामण्यस्य । अवर अवेद्यक्षा मिधियास भद्रभद्रम्परिधिष्ट्रपरिश्रीद् ४३७३३ भविद्रिण व्रथणपः। मञ्जू कार्य माल भूरा गर्म भेरम् गरा ठाष्ट्रः चन्ना हा कि सिक्षेत्रे "ने हः न्रुल्यु उच्च निचयाका। इयम्पः। विभूत्र ने कि। इयम भारतिकरिला अवस्थाना आहा प्रश्नी हा स्वर्धक्ता स्वर्णकार यण्यंभेजिभ ॥ अपभाषः॥ अञ्चेषञ्चः महण्यस्य विष्णाः ष्ठण्या ग्रेज्या वभनामीन नभन्ने ने ने भनामा परिवर्गः भभित्र भिया मन्त्रिक्ति भित्रं वायः। डिस्मितं सहः। चयव वर्षे अस्ति भिश्वयान्त्रभिश्वरहरूभिश्वयथाउत्रभिश्वयभात्त्र उत्रभू इवीभित्रक्ष

क्यान ज्ञान । इस्मिशियमं जन्म विष्य हिल्ला । इस्ट्रिक्ट । यभेग्रा अयसा अपभागाः प्रणमिता स्वयमाला वाष्ठ्राप्रामा टा बनल्डाकाकाकाकाकाल्यका भन्ना स्वाम्या वनल्यु भन्ना व यः गण्डम्बीउ॥ १० इड्रेशः॥ उड्ड विषः ।॥ महानिक्षणाने हर्नियो प्राचित कं कमिरिह। सङ्घानशिक्षिता अनम्मिरिन्द्रिशाम देवन । नेमम् कुल्मा चप्रभाभः। इउठउडिवियानाहि इक्ष्माभाभः । इक्ष्मायुभ चंष्यवन मन्ण्यामा अचरयवद्यक्ता मिर्मिशिभम्हभद्रम्। नेभेक्स। उच्च चित्रभुक्षित्र १८ म्हिनेहिर गुर्वे १ विद्रा गुर्वा । म्विपिकिष्या विक्रमी हारकन मिन्यप्रभाषिक्रिमा । विस्तिभाभाषायानं गर्विभिः नभेन्द्रिः इभभानं । अपित्रा

उत्तर राज्या । निम्बन । उद्वीमनिक्दा उर्थक्टः मर्थकाः न्यभाष्यः पदम्बीरेम्नभा । अयसः मुश्चिष्यमा दिएक् क्रमा न्तिंपरिश्रीहानुपमप्राभाविर्तित न्यानाभावाश्राभेगहर न्यान डाक्या दिहा केरोहा। १ पवन १ र अहर एए दे निवधारि। १ प भागः। विक्राभाः। जाभागाः। भाविकाला वाका अध्या अध्या अध्या अध्या वसराभीन ने भाज्या जिस्मी शुर दिश्यो। नी क्या भान् भी देशा न युक्ता अध्याधाः। प्रचन्याचे। युव्ययं क्राया अध्याप्रः में। हा द्वायः में। हा द्वायः महाका के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के

वर्चि रूप्याचे । मिन्द्र्यान् अविभेकः भर राज्या वर्षे प्रश्नाम विद्वराड्माश्र नामित्वपन्निम् व्यापनिम् व्यापनिम् वामारि धेउसके उत्रेश का भर्भ चे में भाषा। त्र यहा। उत्र हि विया गरिस उत्र भभाभिः॥ इहिषव्निम्द्रलक्ष्यभवाः॥ स्विधिविष्णे॥ अच्चम्य इंक्या विधियिभगत् ३ धदक्षिति विद्या मेने भिर्मे करणांन बेडवर्डभा अविद्याला मचर्याका भाषा प्रकाराका जिप्यति धय अउग्य द'धे निरुभि। मेंचे युर्भा विभू यनभा। मंचे कवहरूमा भारिकाला मंजेनश्रह्मा। प्रदाना के हरा। वसना की नज्ञ भड़्या। उन्जिन्द्रा उद्देन्य जा भिर्मा भवतः ॥ नभिन्मा धीविनी भिरापि डिडियर अभिएककाड़ी अधियी अभिने । यनिर्मा है व्यक्तिं।

34

भानीभ्रात्वा मुच्छार्डभार् कि। गर्बेड्र रहा अद् प्रच्येडी उन इभिडियमत्तेन विदेशितया पद्माइ व्याम भूविण एतया। १ व्याः॥मंबेठवहद्भा।।५णनारुव्यः मय्यभाषात्र।आक्राक्षाक्रात्रक ाउ०थियकुर्यभेषा। पञ्चम्य । भूषीविष्ठः छर्थतिथम्बुरभन् यहमध्यभिष्टिवि । धनम्मिहिर्यं इत्वर्ग नमेह क्रान्न व स्विभिर्यं करणा मंत्रेश्वयूट्मा। उउद्विशिष्याणारित्रत्वभाषित्रः एटि प्रविध्यम्॥ ॥ 53: मीक्भः ॥ विशिधिशिद्या विचिद्य द्वीतिचपित्राणवं देवाति॥ इट र्षेत्रा में इत्याः निया के विद्या विश्वास्तिया के विश्वासिक के विष

उत्ताना भवनंद कि मिना अ महनान म्रीभाष्ट्रवा उउएडि क्रियम्पि उत्रभगिष्टः ।। न्यव्यम्भाष्ट्राः।। मिर्धिपिमीर्।।य ममल्यं निवधाना गर्वधेवालं छष्ट' कणाईलड्या यमक्षेत्रिल्यने भक्तभवद्धाः भवद्भयः भविभक्षतिभक्षम् विद्धाः । अभावत् इक्षिः किल्लाम् कासभा क्रियसे एत्विय विद्याविश । अभावत् । मिम्मक्रम्मान्वरद्धभंदरियोल्भाकाय्यपः ने वल्ल्यानिय्य भाभामकत्त्रमा तर्भाष्ट्रकारिलेण्युग्यानुभन्मः प्रावसि भ्रम् वा कि भू भाष्ट्र श्वाभेष क्राणियां भेष्वियक्षां गर्या ये अभिन कलेथेः स्रेमेभारम् प्रभाष्यपृष्ट मण्डिनिकिरम्हरवि " महै

ब्रिक्भयमश्चिरष्टा हर्गान्त्र अनुनीयक नूभः उउभन्नभगिः जि विश्वनादिरत्रभूभाक्षिः॥भवाषवन्द्रम्थित्रभा॥॥ उत्तर्भे भव वस्तरः रुमा ॥ निर्धिपरिभद्ध धड्ड स्थारिषिष्ट धारिनीद स्वेठव हर्मा महिद्दिल । सुन्याका आहा श्राह्म हो का नाम के लिए । सुन्य प्रमुख्य । निवधिं। में ने ने नुद्रा शिक्ष प्रत्रा मं ने हिंदूर्मा भरिक्षा निवधिं। में ने निवधिं। में दीनवभव्या नभवामाभाजभद्रेश्व ३७ वयर।। मंबेहवहद्याप क्निनि ॥ चुर्चेश्वानाश्चभ्राश्चाकाराकान्यवन्तिक्षण्य स्ता भने मसुद्रम्। नभेगम प्रणानारन ने भाषा मने जिस्सि में। नुन्नि । भने मसुद्रम्। नभेगम प्रणानारन ने भाषा में ने मिया।।

तिवर्णया चयववाउउः अचिमिष्टा विक्रमा यो मुद्या विभिन्न उत्रः एउ किकि : नविगेयन् न मधिपरिश्रीह । निचापः मुद्दारणार्थे कर। धेरमेर्ड गेम्न भयेवासम्बर्धानुं एएकमण्ड प्रदेश लयम्हानमञ् प्रयमगद्भविष्टाम् । म्रिनियद्यम् भयद्र ५ निचर्यथननिभित्रेभनंकारिङ प्रद्वाभीनेप्रकृत्वर्थित्रराज्य द्रं कि हि चिष्क्रिति। इधिकीहिच गण्य यिकीहिच यह इच्चे भवा थु बरचेरिभज्ञहेबुद्धः रकारिकारी जिल्लाम् में व्यक्षः भारत्यम् साम्यास्य साम्यास्य वाम्यास्य द्वारा वंग्यवनं अन्योति प्रवित्र मान्याक्षेत्र यो नुभाव उद्धिनिभा ॥ या नुभितिहा ॥ विद्यात्र सम्बद्धित्र मान्याक्षेत्र यो नुभाव उद्धिति ॥ विद्यात्र सम्बद्धित । विद्यात्र सम्वति । विद्यात्र सम्बद्धित । विद्यात्य सम्बद्धित । विद्यात्र सम्बद्धित । विद्य

उभ में

डाः मुडनाकी इनः हान्य मङ्गि डिश्रणन्था । यक् मङ्गा नग्रवस्त नभन्नामा अधिक कि कि निम्न नम्भाप्य वनः॥ उत्र विधियाना विज्ञासमाधिरम दिश्लीमन्त्रभा । समिरे विक्रमध्याः । प्रिंधिश्वीद निचापः अष्ट्रहणनंकरः इ क्रमानित्यसन कि मान्त्री इन हिन्द्र पणन ह्या। यह महा। करी हम्युलान भवन्दिव इक्यक्षिक ॥ भूणनान व्यक्तिक णन्मा वस्तिक्ति हिमणनिविविधारिः भूषानान वर्षेत्रविभीमकः भूमी भूका छ। व म्बर्धियुर्भमारिक्षभी। विचेश्वर्धेर्ड्यूर्भमारिक्षे। भद्रश्वर्धेर इभगारियभा । नर्द्र उद्धियः नहें विद्यु इश्राचुक्याने । एउडि विः अविधानिक ग्रेड् निर्वेणयो। । अल्डिड कुल्ले भार्द्री

वस्याग्रमवङ्कः गत्राष्ट्रभयंमिक्षिण्यं क्रवा अल्प्यर ग्रामियम्। उर्वेक्यक्ष्रस्य अपनां राभाव उउ भनं उन्ने निवाः।। यद्यभनभन्नः। कत्रस्यमन्त्रस्थान्तं क्यर्य मागर भहरा भारता क्षेत्र हा हविश्व हिंगी विश्व विष्य विश्व व भ्राप्ति नद्भाग्ञ जनविद्यनेभभ्ध। विद्युण्याराय उनकामिधायाभवधिक्रयः हगरनावधिक्रवधिक्रवधिक्रवधिक वर्षक्रमान्द्र । अधिकाल स्वभ्यां अधिक है । विस् ने भागिक मृश्य स्टामा अक्र मा अवस्था भाग प्रचर्य मे विचे विकास्योत् उस्माने क्रम्भिति उप्रथा है। मा हम्मम्लेभनापभिक्षभेजद् । इपेकिस्डिअधिभेष्यार्गर

#3 12 H

चील्नयम्यन उड्उभा किरएकक्ष्यहार्भा किरएक्क ( व्रायः । किन्छा वन्स्व व्याचीनवन्ति व्याचित्र वह भाषः। सार्थ सरविष्ठ कार्क में करिया में बादिक धन दिन मन दिन मन दिन मन मंत्रेचिये खर्म के क्रिया के क्रिया कि कि कि क्रिया निर्मा र्धा विती अण्या अपद्या वित्र भारतिः विष्ट्यम् भारति सिमितार ने द्रारानी माम का नवस्त देशभवदार विरास भागतमात्रामान अति में से वह माना दिसि में मिरिकार है। ने पानिक श्रीभाइडिविचे उक्त भी उभाक्ति वनंग भेवडिशानि म्डिः । देवह क्रमणी क क्रिडियं इत से लम् पूर्ण की । विहे क्षरण मी छाः न भन्न मणी छाः न महक्र के प्राप्ति ।

इपे स्नियं प्रियोग दिश्येष क्षेत्र क्ष क्ष्या ।। निपरया द्वारि अवने प्रिविद्या अल्डासम्भात्रभक्षाध्विषि इर्ग्येनभ भाभजमयाथितिभिन्न राजिम्बार्गिश्विभिन्त्रा नुभानभाय नेथितिधक्तभा भरलेथितिधित्रभा गण्यनेथितिधक्तभा नानेथितिधि कुभा उभुग्रिका स्थान्य अक्रमानुक करानानुक करानानुक करानानुक करानुक करानु भि वसभात्रम् मारे जिल्लामा अन्य भटेवमा एकं मराभ्या श्यानाथवमा समार्गिधयणनभाक्षरभाष्ठात्रभाष्ट्रक्रीः। भट्डि प्रसिद्ध रामा इप्रसिद्ध मा के मान निर्मा करा र अन्त्रभाषि उद्या साहित्यप्रवासना होन्यू भेरि उद्या ने यह मिन् अक्ट हेन्यभाम उद्यान भाषामचेहव पिरामचेहव प्रमाद

347

प्रवेश्व मारिक्य चेश्व याञ्च वर्ष्ट निक्य लिश निक्य कर हा नि निरंगाल चम्रान्थभाषियाति अति अति द्याक्षेत्र स्तिनेरंगाला । नवयक्राभाक्क यभेष्र कृष्ण चग्रुतिभ्रेष्य द्याप्रभनन अस्विउभ्रा॥ । मुद्याप्रयभमुद्धवाप्रया। विद्यम्यभविद्यमयभा ब्रह्मयभद्र इत्यम त्रमयहरू क्रिसिक इसि विमिक इसि विकि इसि सा ण्यस्भाजिने यज्ञानयज्ञानज्ञा नलव्याम् काभागास्य वार् ह ध्वरितंत्रमार्वे रध्वरिया राभ प्रस्थः तथा उप समः लघवस्य निधा धाउम्बास्थानम्बाद्यान्या नम्बित्रां मङ्गितं अत्रित्ते । विमिधिनियम अप्राटक्षणनक्षां निलयकी यन हैने अपि मानि

अञ्च ली मीरं अउधे वण्यितिभड सर में अलाभ्यिति एन माउ क्वल्यन विमान्यान्य द्वार्डिक भर्मीय महिभिन्न प्रश्यभी डिक्येभिन श्र भु भी महश्राहत्रवरभागा भूतिवानभश्रभे न हिम् बन हरा सुराम गई वेड्यंडेभन्दश्रेपेल्लभभीमपाला स्थाभिषेति ह देरिय ग्राक्ण्यम ण्भक्षितिधारिकार्वयस्य दिस्रवलगितिराईभक्षेभ्यस्य नेभेद्रभ यभेजभारीक्रियाच्यनभा भेजभार्यक्रमायाय्यवस्थानगयाउपाय उर्थभाचड्याज्य विचर्वविचाय वश्वविच्य भन्तिचय नभ्या ध्रभवद्भागात्र मारिक विभन्ने विथा थे हे वृद्धि। अचि धं बमानं मारि उत्र क्राम्द्रेय विनार क्रिनेशापल्यार उद्गारि वस्त्रमभूत्रपानुकृति॥ अर्था

अग्राभावन्वरानाभावभूराकि उतिसारा । अन्धीनेग्रहा अर्गेभूमीभीका।महभवः यं यं अत्रान्म्।विरुध्युभेनेणविविर्यं भन निक्भाजनिक्न्यराभानायमित । अव नीनायवारिका निक्निक्भाज लिक्सम्यराभानायमित उउ छण्डस्ति भण्डा है भर्म माना भण्डहा किकि हिमः। इङ्येरिपिः निर्मिश्वाधम्॥ मनुर्मेष्ठमुन्दिभि द । विश्वज्ञमात्रकरे पविस्थन्। ए मलाइ ए ए भिष्म ए जिल्हित धिक्ले प्रयस्तिम् हर्णे भूवभाष्ट्र ॥ उवस्ति इ'ि द्वीमिक प्रवाद् हिडिनुइभोति। उत्स्वि चेक्प्रेनिड चेक्प्रिभम यभिम्य यद्यापाञ्च हिक इति भेक्प्रेन महामें इसंबंध जनडीकिक उन्डमं एमंगेव इली मन्डालाखा

थूर्या रिंड के क्यम्य विडवः नेक्यम्य विश्वेक्यभ्य विश्वेक्यभ्य विश्वेक्यभ्य उह्यभिन्द्रभानी त्रयभिद्रप्रधम मयनेय उभ्रयान त्रभुभन् निर्णकरा धरिर करु येनरिक्तिभ मडिंसिर अध्यक्ष उपरच उपरच ।। यद्धश्री भज्य नयाशिक्षित्रमान्या हिन्द्र ।।। यह मद्द्रभाषा अप्रेत्र क्रभव्यक्तालयम् । उन्हें॥ इप्रशिक्ष्यक्ष्म क्रम्यक्ष्युरिः। भूपिनं क्यमिन्सम्बन्धि इउ:क्लमाननंशभाष्ट्रवेण सुभिष्ठिस् यनभ राष्ट्रक्रमान्यमा । विष्क्रमा द्रश्यमान् भभप नयन विकि है। ए दा। सामझन ।। उर्गा कर्ना महाना

347

गम्य एक्रानि - नेथे माडि भावित की अवं मारित्रे भवित्रे मीत्रे र र्थ। विनर्भेवामन्भेवामभ्यत्यं याक्याम्बर्याम्यान्याम् उर्ध्वम नभःनगरिष्टिभन्दर्देभन्दिश्चिभाभागार्धयेभन्दर्वभन्दिम द्वान इतियाभन्भे मियाभराभेर ए द्वीयविकः भण्येगी थिक कः सम्भा एभनम्हः उभ्माद्यम्बत्मिर्याभ्यत्भम्न भम्न हाभवनाभापन भन्न कलाई क्याम इ द्वार्थः । प्रशासमाधि नम्बरयागायहणमुत्राभा वभाजभाज्ञं भूविम्पि मिक्णयाक्षिमम् लाम्बार्ड मुहनसुनाभागीकाभाउपविमाभ भूजीसारिमा भविर्मव्ययार्ग्जन्डियभावद्य दं देश विद्यार्थ मी सुद्ध किमा भि

इवरण्डेमवडया व दुरं न सन्भाभाग अंध्रिक भू न्या हिमा वालम्पित्र में वर्षे पार्ति ने सुनिम् ने महिमार्थन या सुनिमार्थन या सुनिमार्थ या सुनिमार्थ या सुनिमार्थ या सुनिमार्थ या सुनिमार् अल्य उन्में व्यान युनस्याभः मिमिरभाई प्रविमानि। गण्य हेसि नाच्चिमाभाडि इंडिस्डिये विमाधारण डीस्टिये विमाध मन वृह्मु अध्यान्य पाई स्वार्त्र विमात्र ॥ परिस्थान स्वाः प्र विमानि। क्याभिभविमानि। इतिनः प्रथय चुक्तिन्य तुक्तिभ ए इडियेभा के वियम्बाक्षाक्षाः न क्रिमान्य्य मिनभाभ एउ प्रश्विम्यावस्थाय व्यवस्थाय व्यवस्था विष्ठा विष् इवनभ्यभाग्रे रेक हो भनभाव शिष्टः उद्देशि स क्षण हे

まる

व्यव्यान्त्रभाष्ट वर्णे दिस्ति एक देशन धुन्य स्वः। भी का इति देवन अयमाडि वनवद्यिभागणगाहितभास्यिपंत्रच अभीग स भक्षभाग्नेव कि भुडमा ए मध्यमा मार्थिक विक्रिया के विक्र याः विद्यावभंग हर्वेभभज्ञां है नभेश्वभु अने भक्ष्यत् अन्मप्रय मुख्यार्थित म्याम् ने इक्षि उभागार कर मार बहु सुरगामाधी इन्हें विध्यम्भिक्षित इन्हें विध्यम्भिक्षित स्म उद्भार्थभवडन इ पंभविद्या इनक्रपंभवित्र म्य स्थाविङ्गे भविद्योग्य मित्रमार्थं प्रयमंत्र अधिक्र वाचित्र निर्मा कार्य कार्य

रथम रमस्य देशियमभभ निमयागण निस्म की भूद है से दिया महस्रावद्वयाभग गर्निभागाभिमेश्वभिभविद्वयाभि चनमाउद्वासभएक उन्देशक्य हरा । इस्वर्भनय में भज रुभाव अल्लिभ उद्ये अधिया प्रष्टिय अस्त चालिय अस्तिमा सुभगाउभवेगा वावरीधवभक्षाविम्द्रभावताध्यात्रम् भडिन । एडियर निकी अचासाविः॥॥ धिवरी भिष्ठाभिडिकिस्स भिष्टिक्षक्षान । अधिवीसभिक्षभित्रमित्र इन्भिष्ट्र सम्बन्ध अभिक्सिथिभिक्क इस्प्रेस वज्ञ अप्यम्भाव क्र बन्न सेन सिक्ष है। न्विर्वेभिष्ठं र यभभित्रे उभव्भिषित्रं भूभिक् समिक् र

गर्र

नुस्थां मिल्ला भारत स्थान स्था नभीभद्रात्र म्यारा प्रात्ति । स्यारा प्राति । स्यारा प्रात्ति । स् उथ म्भिर्ड्याभर्ड्याभर्ड्या अर्थे । अर्थे मान्त्र हे उड्ड प्रती भिरम् क्ये उन्हां भ भागपर्ववाचेश्वराध्य भरत्यथा । उद्दर्भितिसम्बन्धवमनभूत्री कानकारम्याम् इसमाहाराज्या गा रे पहार उत्सम र्वक्रिक्रकार्मिवस्य अद्भी र पुंभुभवस्मभाईभिनिंगायहन भीयंग्भभ। यद्य प्रतिष्ठ विष्ठः । अभिन्ति अन्यान्य भी विष्ठ बारित । यंग्री भीयशामंबूक्णाम्बर्डियमिनेम्बानेभ्राह्याद्वियानाभ्य भंवन्नभण्यभाग्राकिरगामिभनभाभामियन। इप्रमहिष

रणार्ग्येक्नेभाष्ड्रेचेयिकिस्रिया मन्येष्ठितस्थानग्रभाष्ट्रस्त लिय्वभिरुख्यः वन्थर्धभन्यान्यीननकुन्धिविर्वात्रः के याराष्ट्रमाभवभडिचित्रेभ्यारास्त्री उयाराद्धिभिषिक्रभा " एग्डा इण्डिनेशियानिस्पाइस्ए। सन्दित्तिनश्यान एडाध्रूरण्याभ उज्वर्शिक्षण उमेरिक्ष इवने ए एन । भक्त मुम्ने किनि इति वे भेवये अभगउचेरची का भे न स्थित्र उत्तेय दि इच उद्गेय हैं भू वया व दर्जे। इ क्षितिस्थितस्थितस्था यहस्था वर्षा स्थान स्कार देवियु विश्व हुम इंगिनिय विषयमा अभूद्र भर्थ पंचानिय क्रदल्याका अरा में। हा विश्व प्रवर्गाम्य में ले में बेवन

34

भथरिका विक्रिया भीनं कह पालिका विही हिल्प प्रचं मुदियश्वभान राकभद्यानमाधिन हिस्प्याचे मुनियं प्रचानिय न निर्वादि हैं भावि रीरिक्यभच चुवव्राअइच्यरवानाइ सीउन मित्रियं महस्या वियाम उभने अयाक्र अधिविश्विश्विश्विश्व विश्वितः। विदिश्य प्रविश्व विचिक्यं अतिहास अधिकः परिभित्तः स्वभवस् विवकः अभविति निग्न हो अद्येत्रमहभारत्यास्य । प्रामुद्र कृष्णभूरत्येत्रस् भेदि उपप्रयाचिभर्यसम्मानव उद्भूष्य स्वत्या भाग । इत्य कृत्यामा चे में इस्मारा प्रस्वीर वर्गा कि रेम में बर्ग स्था है स्वी है मण्यस्य विश्व विश्व विश्व क्षेत्र क्षे

अग्य स्मी है। इनी मिर्वे स्थित स्था प्राप्त नाउता है ने से हैं। ध्यध्यम्भम् भाषधितं सापयद्यभाष्यद्वसी स्व प्रम्पात्रस्त उश्वास्त्र माया स्वास्त्र भाषाया स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य नकरें उरा अध्यान । गर्यहिभाइम्डिभिर्णगं में भगविभावम् मभाभगरश्रहानभाग्यविष्ये निष्यमिश्रार्थं में सन्तं दं भंदी है। ने विश्वधिमाय विश्वधिमाय क्षेत्र क्षेत चाउ मुने म्ब्युभानिक भंगिरम्बग्रभाग म्बर्भाव उद्देशधा लिम्बुईित अवक्रम्डम् च्राष्ट्रियम् निस्मिन् 

34

स्यामभभ्रम् विहेड एक इत्र वस्त स्वयं भी द्रभद्रभभभाष स्थान भभ छाँचे इमेल्भावीद्रामभवयाभी प्रभद्रभभ्भाष्य छुच्यालभ्य छाँचे इमिलभारीहलाइनयभीयभागभभाभभागभुष्टाचिर्भक् धम्बिक्सभनग्नी, प्रभजभभभभम्य वालभभम् विद्यस्य विद्यस्य चनयाभी समजभा नुराभार कर समने राभा भी दाल प्रराचा धनिह उन्हान्सभनयाथ्यावसभागवस्थितिहस्थर्भद्राम्बुभानीत्। क्षालाइसकाक लड्डेक्स कोलडक्यावः कालाइ उद्यस्थान प्रहातिः कालाइस्मेभः कालाइस्याः कालाइप्रहार्म् व लडहं अर्थित यह महाइंडमहत्र्याल इक्सर्गी वर्षित

प्रहरू - - प्रकृष्यस्भिच्नेभानकम् जुर्मिकाश्युष्ठे । क्यांयक भगलवज्ञानमम्द्रवीः भगमण्यवयः भलवज्ञानम् क्रिक् स्पक् उम्बेट्य अथान देश नम्मानंगरः नमतमरी रथानः यत्रकारं मरीवेराधा हिरह्यधवसः नभवभं स्थापत ह्यामी अप्रवास्थान हो या निविद्या मिलिस निव्या निक्ति हो स्थान है। र्वः स्वित्रविधयभग्ग यनक्रिनामिक्रम् कभग्रहिद् भवीयामिडिङ्ग्माद्यः ननजेङ्ग्रीष्ट्राः प्रथ्यञ्चरङ्ग्रीष्ट्राः नभेग्मच डाह्मीयः प्रिभाग्धः इष्ट्रक भागामन्थयानु

30

जिन्युवानंभडे पलिडेल गण्येन स्थम् कृष्टे अविद्य रोभाव भहान न्यस्त्राम् विहास लिया लिया लिया लिया विहास स्तान उथ अम्बन्धिक अवः। म्हलिय स्थान अक्या अभ्यानिक विष् मृत्र उउरभा। द्वन वर्भ स्थान स्था भी न उपनि स्था वर्ष दिइत्यम्ब्यम्बल्यम् विषय्यक्षम् । ज्यादियम् अपिति । उत्पत्र धलक्र उर्रेडियु म बेन्थिय । अविकास्थ भिन व्यास्ति विकासित क्रयाभद्र भन्डलिया स्थापना प्रश्न विद्या स्थापना प्रति है द्या स्थापना प्रति । यानिराधार्यि। स्वार्थिन प्रतिन्य विश्व स्थारित एक प्रणानि रिविष्टि । स्वार्थिन विश्व विष्य विश्व विश्व

ण इसे विसे इदर्न एएन। भन्न संबंधिक रिक्ष वर्ष धर्म भपउये न्वपदभ्रभा त्रम्बन्धवीद्भ । मण्यू विभविष्धभा वर्त्व वृत्त् मण्यविज्ञात्यक्रिश्वाभिभीष्य। याण्येविकाभ्यानिष्ठानेव अकिस्भित्रभग्रान् भड्डेग प्रवेभव्वर्गन्ति में मुगुम्भ इस्। वह यहानेदन लाग मली दिल्ल मिनिक अदिनार विन व स्म कर नाय इस्प्री भ्याक द्वाना यहार भा । मिनेनेय दि चिका हिः । भ्या हिंद भिम् संभभक्षानियाक्त्वयद्वयुचित्रेलानिकायं भेठिएमं। यवस निवीरेग हमं हुगरणः - दिर एग हाउँ डिभप्न यद्य भी डिभप्नी ND3

य द्वामायभावभावभाव महत्र मान्यामाय । यहावभाव प्रमानिक विकास स्थान में स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान भिन्न अभंत्रभिन्न अभागामिक स्थाभिक्त स्थापन स्थापन इवज्ञ अन्मभिद्धाः ग्रम् अवभावति ॥ धारिवीभभित्रः भा अद्युव्य इंडिइडिविभिकः न सद्द्रअपन्यभू स्थित्यप्रश्नित्वक्रम् स बुउपिडासिड्डभग्राविधेडमं सर्वे इत्रिश्चिम्भ से चिप्या। गार्थवाबे रा वर्षश्वात्र व्यवस्थाति ।। मुक्तिवेश्वस्थान मुख्य मुद्रमान भूलकः भूलम्बि। इन्याश्चानं मेकि। म्रयन्य वयानं मक्त

मक्त मक इस्टि । मेर्म मुस्मिन । बेने म बेने मस्टि उप्यान । भून राष्ट्रा । अयदं विभयन्त्रभिष्याच्यानः अन्द्रिष्ठि द्रशिभागाने नथहः ने महद्यागिष्यम्य स्वद्धानिष्य वस्त्री स्वापान व भीः नभर इया चरिक् भम् यश्च वा उद्ध व अभ्यन भन्न मा अभागे अभागे भर्गभारिभीः । इङ्गण्यभुरम्भिम् इङ्ग्लुभी दुर्गः नश्मिनभुभगभुगानुवाअभवाभुभा अया हिभा द्विष्ट्रिया वर्षे हि माः निक्ति। महित्र महिताः सम्प्रिमार्ग हिना निक्रा वयं विषाः उराज्यादिक्षारं विवाद्यादिय हुपः दे दिविष्टि होते

यक

ल में वार्या ५३ एड्स न स्वामें वाडिश लाडिश के ने सिंह दिस इंडिस है के यहाँ में में इंडिस के किर अधिपाड अभ्यानि सिंह विषय्मित्रगिर उनेभिष्टेनर्गेर्भगतन्थातिश्वित्रणिषि विषयः अधिनीमानि रनिर्देशनि देशनिमान्निर पञ्चानि नेभाग्यक्रानि चनभाग्यक्रानिभ्यक्षेमञ् भवमञ् भडंडियम मार्चिक्रीभमा जिने वे नियम जिने मिला जिल्ला निक्रानिः " यारायिक यामानिक गामिसान क्रान्य भागनी का भवश्रिकार्योग भारति । भारति । भारति । भारति । राधानीय अद्धर्मक्षण्येन अद्धर्मक्षिति "

भिर्धमदानीयोगः स्वेम्यध्भानभिष्ठभेषिर्यवश्रभा । भेट अम्यानीया अविविद्या प्रमानिश्व मिर्म्य वस्त्रभा प्रभाव प्राप्त प्र भवे वयान इस्तिमण्डन भन्तरण्यमक्त्र ने ये विव्याभनभः उ अरूपराजनः उम्बीरिन्भाउरर अभाजरङ्गभाभवेराभुवाया यि जिया वर्ष न्यामानः ॥ प्रभः धीली इक्सर्वे वर्षे वर्षे वर्षे हि । क्र अदे रूपे। में के बीरिक्ष वर्षे रहत भी उसे में चेर । हि भूवत्नः । मनिभित्र पुरितणपूर्वि हत्वहत्या मनि इन्से सार्थिय उस्त्रेनिम्रेन्द्रभः मेनेभिड्नेरुण्याने मेनेभिड्नेरुण्याने । इ. अथवा किने व्यवण

學學

उभद्रपत्रक्त उ निरुष्याना निर्मुनिभिर्माना भाग छे अभूय उद्गिष्ठि मद्भ क्यानिहें वज्जीभम् योगभाप क्यमिम् याचीर ए क्या भड़िशा राभा में भड़ महाभः माका विकार मार्गिय शिक्षण भाषी न अविड लवर्गाण्ये मडेठवधुडििट येडम् पुरश्चमान्द्रेश्नकण हिंदी के क्ष्मारी अध्या अभाग्ये के तिहाल स्पर्धिय विकास अध्या रमुडरमानिः॥ ४४४ यम् इस्मान्य भाषाः नवानाम्बर्भाग भव अमेर्ड्डेडे भंभे या वर्ड जंग नियमध्यम मेन डिम्पियभविम्धः माउड्ड क्रमन्त्रभानक्वीत्भाक्त्रययन्यक्व कवाकेश भक्षीयात्र ॥ अयये १।

भावात्रामादानाकाकाकाकाकम्याद्यान्यान्यानिन्याभीतिन्द्रहेभः प्यान वस्त्रमेरेन ज्यक्त प्रचेर हो ग्रेस भाषा का भाषा मान के स्त भेभाग्रिक मन्द्रिष्ठियम्द्रियनम्बिर्मिष्णीरलस्य भूभाजन किरिह्णिमवयवनियासभेतिमधंग मिक्छिम् स्वाप्यमिनिक द्रितिविद्धवेडे गर्वभ्रष्ट्यवेष्ठ्यवेष्ठ्यवेष्ठ्यवेष्ठ्यवेष्ठ्यवेष्ठ्य न्नभजभाज्ञभगिवया वाय्यक्षारिम्धाउवेभनीयुः प्रनेत्रकः प्रवीद्व न्धवरीभइवङ्डम्भवः भजनभीभजभन्मभजभग्याभजभेभजभाव ि द्वीचे ल्डभवरीचे स्वयुद्धम्यः म्रथम् विभ्रथः स्व

が一